

પ્રકાશન નં. ૯

50

મક્રબૂલ દુઆઈ

મقبول دعائیں



ઈસ્લામિક ઈન્ફોર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ

C/o. અબ્દુલ મજીદભાઈ, આનંદ હેર આર્ટ,
હોટલ નૂરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભૂજ - ૩૬૬૭

M. 9879671123 Blog : www.iicbhuj.blogspot.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तम्हीद

दुआ अल्लाह रब्बुल ईज़्जत को अेक महबूब अमल है. जिस ज़बान में भी दुआ की जाये, अल्लाह रब्बुल ईज़्जत ईन्हें अपने दामन में जगह अता इरमाता है. ता-हम अंबिया व रसूल की ज़बाने-मुबारिका से मांगी गई दुआओं मुफ़्तर होने के साथ-साथ ईतनी ज़मेअ हैं के उनमें वो तमाम चीज़ें मांग ली गई है, जिसकी अेक ईन्सान को दुनिया व आभिरत में हाजत व मुइरत होती है.

लिहाज़ा ईन दुआओं को पढने और याद करने में ईस बात की ज़्यादा उम्मीद है के अल्लाह रब्बुल ईज़्जत ईन्हें शरई-कुबूलियत से नवाजे.

أَعِذُّ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ.

अउलु बिल्लाह मिन्श-शैतानिर्-रजिम.

“पनाह मांगता हुं मैं अल्लाह की शैताने-मरदूद से.”

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَانِ الرَّحِيمِ.

बिस्मिल्लाहिर्-रहमानिर्-रहीम.

“शुरु करता हुं अल्लाह के नाम से, जो निहायत
मेहरबान, बडे रहमवाले हैं.”

(१)

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ

أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٧٢﴾

रब्बना तकब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्-समीउल्
अलीम. (सूर: अकरह, आ. १२७)

“अय हमारे रब ! तु हमसे (दुआओं को) कबूल
करमा, तु ही सुननेवाला और जाननेवाला है.”

(२)

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا
أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۖ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ
عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾

रब्बना व-जूअल्ना मुस्लिमईनि ल-क व-मिन्
जुरियतिना- उम्मतम्-मुस्लिमतन् ल-क. व अरिना
मनासिकना व तुब् अलईना, ईन्नक अन्तत्-तव्वाबुर्-
रहीम. (सूर: अकरह, आ. १२८)

“अय हमारे रब ! हमें अपना इरमाअरदार
बना ले और हमारी औलादमें से भी अेक जमाअत
को अपना ईताअतगुआर रब, और हमें अपनी
ईआदतें सिषा और हमारी तौबा कुबूल इरमा. तु
तौबा कुबूल इरमानेवाला और रहम-व-करम
करनेवाला है.

(3)

رَبَّنَا آتِنَا

فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ

حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

रब्बना आतिना इन्-दुन्या उसनतं व-इल्
आभिरति उसनतं व-किना अजाबन्नार.

(सूर: अकरह, आ. २०१)

“अय हमारे रब ! हमें दुनिया में नेकी दे,
और आभिरत में भी भलाई अता इरमा और
हमें अजाबे-जहन्नम से नजात दे.”

(४)

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا
وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

रब्बना अफ्रिगु अलधना सब्रं व-सब्बित
अक़दामना वन्सुर्ना अलल्-कव्मिल् काफ़िरीन.

(सूर: अकरह, आ. २५०)

“अय हमारे रब ! हमें सब्र दे, साबितकदमी
दे और कौमे-कुफ़ार पर हमारी मदद इरमा.”

(૫)

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا

રબ્બના લા-તુઆખિઝ્ના- ઈન્નસીના- અવ્-
અખ્તઅના. (સૂર: બકરહ, આ. ૨૮૬)

“અય હમારે રબ ! અગર હમ ભૂલ ગયે હોં યા
ખતા કી હો તો હમેં ના પકડના.”

(૬)

رَبَّنَا وَلَا تَحْبِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا
كَمَا حَبَلْتَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا

રબ્બના વ-લા તહ્મિલ્ અલઈના- ઈસ્રન્ ક-મા
હમલ્તહ્ અલલ્લીન મિન્ કબ્લિના.

(સૂર: બકરહ, આ. ૨૮૬)

“અય હમારે રબ ! હમ પર વો બોઝ ના ડાલ,
જો હમસે પહલે લોગોં પર ડાલા થા.”

(9)

رَبَّنَا وَلَا تُحِثْ عَلَيْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ
وَاعْفُ عَنَّا وَارْحَمْنَا إِنَّكَ أَنْتَ
مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ٢٨١

રબ્બના વ-લા તુહમ્મિલ્ના મા-લા તાકત લના
બિહ. વઅફુ અશા, વગ્-ફિર લના, વર-
હમ્ના, અન્ત મવ્લાના ફ-સુરના અલલ્-કવ્મિલ્-
કાફિરીન. (સૂર: બકરહ, આ. ૨૮૬)

“અય હમારે રબ ! હમ પર વો બોઝ ના ડાલ,
જિસકી હમેં તાકત ના હો ઓર હમસે દરગુઝર
ફરમા, ઓર હમેં બક્ષ દે, ઓર હમ પર રહમ
કર. તુ હી હમારા માલિક હૈ, હમેં કાફિરો કી
કૌમ પર ગલ્બા અતા ફરમા.”

(૮)

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ
هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ
رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

રબ્બના લા-તુઝિગ્ કુલૂબના બઅદ-ઈઝ્
હદઈતના વ-હબલના મિંલ્લ-દુન્ક રહમા, ઈન્ન-ક
અન્નલ્-વહ્હાબ. (સૂર: આલે ઈમરાન, આ. ૮)

“અય હમારે રબ ! હમેં હિદાયત દેનેકે બાદ
હમારે દિલ ટેઢે ના કર દે ઓર હમેં અપને પાસસે
રહમત અતા ફરમા. યકીનન્ તુ હી બહુત બડી
અતા દેનેવાલા હૈ.”

(૯)

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ
لَّا رَيْبَ فِيهِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخَلِّفُ الْمِيعَادَ ۝

રબ્બના ઇત્તક જામિઉત્તાસિ લિ-યવ્મિલ્-લા-
રઈબ ફીહિ, ઇત્તલાહ લા-યુખ્લિફુલ્ મીઆદ.

(સૂર: આલે ઇમરાન, આ.૯)

“અય હમારે રબ ! તુ યકીનન્ લોગોં કો એક
દિન જમા કરનેવાલા હૈ, જિસકે આને મેં કોઈ
શક નહીં. યકીનન્ અલ્લાહત્ આલા વા'દાખિલાફી
નહીં કરતા.”

(૧૦)

رَبَّنَا إِنَّا
أَمَّاتٌ فَاقْضِ لَنَا ذُنُوبَنَا
وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٧﴾

રબ્બના- ઈશના- આમત્તા ફગ્ફિર્-લના
ઝુનૂબના વ-કિના અઝાબનાર.

(સૂર: આલે ઈમરાન, આ. ૧૬)

“અય હમારે રબ ! હમ ઈમાન લા ચૂકે,
ઈસલિયે હમારે ગુનાહ મુઆફ ફરમા ઔર હમેં
આગ કે અઝાબ સે બચા.”

(११)

رَبَّنَا اٰمَنَّا بِمَا اَنْزَلْتَ
وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ
فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّٰهِدِيْنَ ۝

रब्बाना- आमना जिमा- अ-अलत वत्-
तबअनर्-रसूल इ इ-तुब्ना मअश्-शाहिदीन.

(सूर: आले इमरान, आ. ५३)

“अय हमारे रब ! हम तेरी उतारी हुई वही
पर ईमान लाये और हमने तेरे रसूल की
ईताअत की, पस, तु हमें गवाहों में लिख ले.”

(१२)

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا
فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿١٣٤﴾

रबनग-इर-लना जुनूबना व-ईस्राफना ई
अमूरिना व-साबित अक़दामना वन्-सुर्ना
अलल्-कवूमिल्-काफ़िरीन.

(सूर: आले इमरान, आ. १४७)

अय हमारे रब ! हमारे गुनाहों को बक्ष दे और
हमसे हमारे कामों में जो बेजा जुयादती हुई है, उसे
भी मुआफ़ इरमा और हमें साबितकदमी अता
इरमा और हमें काफ़िरीं की कौम पर मदद इरमा.

(૧૩)

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ

هَذَا بَاطِلًا ۖ سُبْحٰنَكَ فَعِنَّا

عَذَابِ النَّارِ ۝

રબ્બના મા-ખલકત હાઝા બાતિલા, સુબહાનક
ફકિના અઝાબનાર.

(સૂર: આલે ઈમરાન, આ. ૧૮૧)

“અય હમારે રબ ! તુને યે કાયનાત બેફાયદા
નહીં બનાઈ. તુ પાક છે, પસ હમેં આગ કે અઝાબ
સે બચા લે.”

(१४)

رَبَّنَا إِنَّكَ مَن
تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝

रब्बना- ईशक मन् तुद्खिलिशार इ-कद
अप्पय्तहू व-मा लिग्-आलिमीन मिन् अन्सार.

(सूर: आले इमरान, आ. १८२)

“अय हमारे रब ! तु जिसे जहन्नम में डाले,
यकीनन् तुने उसे रुस्वा किया और आलिमों का
भददगार कोई नहीं.”

(૧૫)

رَبَّنَا إِنَّا
سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ
أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۗ

રબ્બના- ઈત્તના સમિઅના મુનાદિયં-ય્ યુનાદિ,
લિલ્-ઈમાનિ અન્ આમિનૂ બિ-રબ્બિકુમ્ ફ-
આમન્ના. (સૂર: આલે ઈમરાન, આ. ૧૯૩)

“અય હમારે રબ ! હમને સુના કે મુનાદી
કરનેવાલા બા-આવાઝ બલંદ ઈમાન કી તરફ
બુલા રહા હૈ કે લોગોં ! અપને રબ પર ઈમાન
લાઓ, પસ હમ ઈમાન લાયે.”

(१६)

رَبَّنَا فَاعْفُرْ لَنَا
ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا
وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٦٣﴾

रब्बना इगुफ़िरलना जुनूबना व-कफ़िर अत्रा
सय्यिआतिना व-तवफ़िना मअल् अब्रार.

(सूर: आले इमरान, आ. १८३)

“अय हमारे रब ! अब तु हमारे गुनाह
मुआफ़ इरमा और हमारी बुराईयां हमसे दूर
कर दे और हमारी मौत नेकीयों के साथ कर.”

(१७)

رَبَّنَا وَأَتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ
وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ
إِنَّكَ لَا تَخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

रब्बना व-आतिना मा व-अतना अला
रुसुलिक व-ला तुप्जिना यम्मल् कियामह. एत्रक
ला तुप्लिहुल् मीआह.

(सूर: आले एमरान, आ. १८४)

“अय हमारे रब ! हमें वो दे जिसका वा'दा
तुने हमसे अपने रसूलों की ज़बानी किया है और
हमें किया मत के दिन रुस्वा ना कर, यकीनन् तु
वा'दापिलाही नहीं करता.

(१८)

رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا
مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا
عَيْدًا لِلأَوَّلِينَ وَآخِرِينَ وَأَيَةً مِّنكَ
وَازْرُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

२७७ना- अन्जिल् अलईना मा-ईदतम्-
मिनस्समा-ई तकूनु लना ईदल्-लि अव्वलिना व
आभिरिना व-आयतम्-मिन्क, व-र् जुक्ना व-अन्त
अईरुर्-राज़िकीन. (सूर: माईदा, आ. ११४)

“अय हमारे रब ! हम पर आसमान से पाना
नाज़िल इरमा के वो हमारे लिये अेक पुरी की बात
हो जाये और तेरी तरफ़ से अेक निशानी हो जाये
और तु हमको रिज़क अता इरमा दे और तु सब
अता करनेवालों से अच्छा है.”

(१८)

رَبَّنَا اٰمَنَّا بِكَ كَتَبْنَا مَعَ الشَّٰهِدِيْنَ ﴿١٧﴾

रब्बना- आमना इ क्तुबना मअश्-शाहिदीन.

(सूर: माईदा, आ. ८३)

“अय हमारे रब ! हम ईमान ले आये, पस तु हम को भी उन लोगों के साथ लिख ले, जो तस्दीक करते हैं.”

(२०)

رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا

صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٨﴾

रब्बना- अइरिगु अलईना सबरं-व-तवईईना मुस्लिमीन. (सूर: आ'राइ, आ. १२६)

“अय हमारे रब ! हमारे उपर सब्र का ईमान इरमा और हमारी जान डालते-ईस्लाम पर निकाल.”

(२१)

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا سَكَّةً
وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا
لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَسِرِينَ ۝

रब्बना जलम्ना अन्कुसना, वर्यल्लम तग्फिरलना
व-तरहम्ना ल-नकुनन्न मिनल्-भासिरीन.

(सूर: आ'राफ़, आ. २३)

“अय हमारे रब ! हमने अपना बडा नुकसान
किया और अगर तु हमारी मगफिरत ना करेगा
और हम पर रहम ना करेगा तो वाकई हम नुकसान
पानेवालोंमें से हो जायेंगे.”

(२२)

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝^{٤٢}
रब्बना ला-तजूअलना मअल्-कव्मिन्-अलिमीन.

(सूर: आ'राफ़, आ. ४७)

“अय हमारे रब ! हमको अलिमों के साथ सामिल ना कर.”

(२३)

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ
وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝^{٨٩}

रब्बनइ-तह् बर्धनना व बर्धन कव्मिना बिल्-हक्कि
व-अन्त बर्धनुल् इतिहीन. (सूर: आ'राफ़, आ. ८८)

“अय हमारे रब ! हमारे और हमारी कौम के
दरमियान हक्क के मुवाफ़िक़ हैसला कर दे और तु
सबसे अच्छा हैसला करनेवाला है.”

(२४)

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِينَ ﴿٨٦﴾

रब्बना ला-तजूअलना इत्ततंल्-लिल्-कव्मिज़्-
आलिमीन. व-नजिजना बि-रहमतिक मिनल् कव्मिल्
काफ़िरीन. (सूर: यूनुस, आ. ८५-८६)

“अय हमारे रब ! हमको आलिमों का इत्ना
ना बना और हमको अपनी रहमत से इन काफ़िर
लोगों से नज़ात दे.”

(૨૫)

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نَعْلِنُ ط
وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ
فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝

રબ્બના- ઈત્તક તઅલમુ મા-નુખ્ફી વમા નુઅલિનુ,
વ-મા યખ્ફા અલલાહિ મિન્ શયઈન્ ફીલ્-અદિ વ-
લા ફિસ્-સમાઈ. (સૂર: ઈબ્રાહીમ, આ. ૩૮)

“અય હમારે રબ ! તુ ખૂબ જાનતા હૈ જો હમ
છિપાએં ઓર ઝાહિર કરેં, ઝમીનો-આસમાન કી
કોઈ ચીઝ અલ્લાહ પર પોશીદા નહીં.”

(२६)

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝

रब्बना व-तकबल दुआ-अ. (सूर: एब्राहीम, आ. ४०)

“अय हमारे रब ! मेरी दुआ कुबूल करमा.”

(२७)

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي

وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ

يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

रब्बनगुफ़िर्ली व-लि वालिदय्य व-लिम् मुअ्मिनीन
यव्म यकूमुल् हिसाब. (सूर: एब्राहीम, आ. ४१)

“अय हमारे रब ! मुझे बक्ष दे और मेरे मां-
बापको भी बक्ष दे और दीगर मोमिनोंको भी बक्ष
दे, जिस दिन हिसाब होने लगे.”

(२८)

رَبَّنَا آتِنَا

مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا

مِنْ أَمْرِنَا سَرًّا ۝

रब्बना- आतिना मिल्-ल-दु-क रह्मतं-व-
उय्यिअ-लना मिन् अम्रिना रशदा.

(सूर: कहुफ़, आ. १०)

“अय हमारे रब ! हमें अपने पास से रहमत
अता इरमा और हमारे काम में हमारे लिये
राहयाबी को आसान कर दे.”

(२८)

رَبَّنَا إِنَّا أِتَّخَفْنَا

أَنْ يَفْرُطَ عَلَيْنَا

أَوْ أَنْ يَطْغَى ۝

रब्बना- ईशना नभाकु अंय-यङ्रुत अलईना-
अव् अंय-यत्गा. (सूर: ता-हा, आ. ४५)

“अय हमारे रब ! हमें भौंड़ है के कहीं वो
(इरिऔन या दुश्मन) हम पर कोई ज्यादती ना
करे या अपनी सरकशी में बढ ना जाये.”

(30)

رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى

كُلَّ شَيْءٍ ۖ خَلَقَهُ

ثُمَّ هَدَى ۝

રબ્બુનલ્લઝી અઅતા કુલ્લ શય્ઈન્ ખલ્કહૂ સુમ્મ
હદા. (સૂર: તા-હા, આ. ૫૦)

“હમારા રબ વો હૈ જિસને હર એકકો ઉસકી
સૂરત-શક્લ અતા ફરમાઈ, ફિર હિદાયત કી રાહ
સુઝા દી.”

(39)

رَبَّنَا آمِنَّا

فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا

وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ﴿١٠٩﴾

રબ્બના-આમના ફગ્ફિરલના વર-હમ્ના વ-અન્ત
ખઈરુર-રાહિમીન. (સૂર: મુ'મિનૂન, આ. ૧૦૯)

“અય હમારે રબ ! હમ ઈમાન લા ચૂકે હૈં, તુ
હમં બક્ષ દે, હમ પર રહમ ફરમા, તુ સબ મેહરબાનોં
સે ઝ્યાદા મેહરબાન હૈ.”

(32)

رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۗ

إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۙ

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۙ

रब्बनसू-रिक् अशा अजाब जहन्नम, ईश
अजाबहा कान गरामा. ईन्नहा सा-अत् मुस्तकरं-
व-मुकामा. (सूर: कुरकान, आ. ६५-६६)

“अय हमारे रब ! हमसे दोज़ाब का अजाब
परे ही परे रब, क्यूं के ईसका अजाब थिमट
जानेवाला है. बेशक वो ठेहरने और रुकने के लिहाज
से बहतरीन जगह है.”

(33)

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا
وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ
وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٤٣﴾

रब्बना हब्लना मिन् अजवाजिना व-
जुरियातिना कुरत अअ्युनिव्-वज्जअल्ला लिल्
मुत्तकीन इमामा. (सूर: कुरकान, आ. ७४)

“अय हमारे रब ! तु हमें हमारी बीवीयों
और औलाद से आंभो की ठंडक अता इरमा और
हमें परहेजगारों का पेशवा बना.”

(34)

رَبَّنَا
لَعَفُورٌ

شَاكِرٌ
④ ۳۳

રબ્બના લ-ગફૂરુન્ શકૂર. (સૂર: ફાતિર, આ. ૩૪)

“હમારા રબ બડા બક્ષનેવાલા,
બડા કદરદાન હૈ.”

(34)

رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا
فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ
وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

रब्बना वसिअ्त कुल्ल शय्'ईर्-रहमतं व-व-ईल्मन्
इगु'ईर् लि'ल्लज़ीन ताबू वततबउि सबीलक व-किहिम्
अज़ाबल् ज़हीम. (सूर: मु'मिन, आ. ७)

“अय हमारे रब ! तुने हर चीज़ को अपनी
भक्षिस और ईल्म से घेर रब्बा है, पस तु ईन्हें
भक्ष दे जे तौबा करें और तेरी राह की पैरवी करें
और तु ईन्हें दोज़ख के अज़ाब से भी बचा ले.”

(३६)

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ
 مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ
 الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ
 فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۝ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

र०ब०ना व-अद्भिल्हुम् जशाति अद्निनिस्लती व-
 अतलुम् व-मन्सलह भिन्आबा-ईहिम् व-अजवाजिहिम्
 व-जुरिया-तिहिम्. ईशक अन्तल् अजीजुल् उकीम.
 वकिहिमुस्-सय्यिआत. वमन्तकिस-सय्यिआतियव्मईजिन्
 इ-कद् रहिम्तह्, व-जालिकहुवल् इजुल् अजीम.

(सूर: मु'मिन, आ.८-८)

“अय हमारे रब ! तु ईन्हें हमेशगीवाली जन्नतों में ले
 जा, जिनका तुने ईनसे वा'दा किया है, और ईनके बापदादाओं
 और बीवीयों और औलादोंमें से (भी), उन (सब) को जो नेक-
 अमल हैं. बेशक तु ही है जबरदस्त हिकमतवाला; और बया
 उनको बुराईयों से और जो उस दिन बुराईयों से बया, तुने
 उस पर रहम किया और यही बड़ी कामियाबी है.”

(39)

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ
سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا
غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝

रब्बाना-किरलना व-लि इब्बानिनल्लहीन
सबकूना बिल् इमानि व-ला तज्जल ही कुलूबिना
गिल्लल्-लिल्लहीन आमनूरब्बाना- इत्तक रउरु-
रहीम. (सूर: उशूर, आ. १०)

“अय हमारे रब ! हमें बक्ष दे और हमारे उन
भाईयोंको भी बक्ष दे, जो हमसे पहले इमान ला
चूके हैं, और इमानवालों की तरफ से हमारे दिल
में कीना (और दुश्मनी) ना डाल, अय हमारे रब !
बेशक तु शक्ति व मेहरबानी करनेवाला है.”

(34)

رَبَّنَا عَلَيْكَ

تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ

أَنْبَيْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٣٤﴾

રબ્બના અલઈક તવક્કલના વ-ઈલઈક અનબના
વ-ઈલઈકલ્ મસીર. (સૂર: મુમ્તાહિના, આ. ૪)

“અય હમારે રબ ! તુજ હી પર હમને ભરોસા
ક્રિયા ઓર તેરી હી તરફ રુજૂઅ કરતે હૈં ઓર તેરે
હી તરફ લૌટના હૈ.”

(36)

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا
إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

रब्बना ला-तजूअलना फित्ततंल्-दिल्ललीना
कफ़रु वगू-फ़िरलना रब्बना ईन्नक अन्तल् अलीज़ुल
उकीम. (सूर: मम्तल्लिना, आ. ५)

“अय हमारे रब ! तु हमें काफ़िरों की
आज़माईश में ना डाल, और अय हमारे रब !
हमारी ખताओं को बक्ष दे. बेशक तु ही गालिब
हिकमतवाला है.”

(४०)

رَبَّنَا آتِنَا لَنَا
نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا
إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

रब्बना- अत्मिम्-लना नूरना वग्-फिरलना.
ईत्तक अला कुल्लि शय्ईन् कदीर.

(सूर: तहरीम, आ. ८)

“अय हमारे रब ! हमें कामिल नूर अता इरमा
और हमें बक्ष दे. यकीनन् तु हर चीज पर कादिर
है.”

(४१)

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ
بَيْتِيْ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ
وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝۴۸

रब्बगुफ़िरली वलि वालिदय्य व-लिमन् दखल
बय्तिय मुअ्मिनान्-वलिल् मुअ्मिनीन वल्
मुअ्मिनात. व-ला तजिदिज्-अलिमीन ँल्ला
तबारा. (सूर: नूह, आ. २८)

“अय मेरे रब ! तु मुझे और मेरे मां-बाप
और जो भी ईमानदार होकर मेरे घर में आये
और तमाम मोमिन मर्दों और कुल ईमानदार
औरतों को बक्ष दे और काफ़िरो को सिवाय
बरबादी के ओर किसी बात में ना बढा.”

(४२)

رَبِّ لَا تَذَرُ عَلَيَّ الْأَرْضَ مِنَ
الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝ إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يُضِلُّوْا
عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝

रब्बि ला तज्जर अलल्-अर्दि मिनल् काफ़िरीन
दय्यारा. ईन्नक ईन् तज्जरुम् युजिल्लु ईबादक व-
ला यलिदू ईल्ला इफ़जिरन् कफ़ारा.

(सूर: नूह, आ. २७)

“और अय मेरे रब ! तु इअे-जमीन पर किसी
काफ़िर को रहने-सहने वाला ना छोड, (क्युं के)
अगर तु छोडेगा तो (यकीनन्) ये तेरे (ओर)
बंदो को भी गुमराह करेंगे और इफ़जिरों और ढीठ
काफ़िरों को ही जनम देंगे.”

(४३)

رَبِّ

بَيْتِي وَأَهْلِي

مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

रब्बि नजिजनी व-अहली मिम्मा यअमलून.

(सूर: शुअरा , आ. १६८)

“अय मेरे रब ! मुजे ओर मेरे घरवालों को
ईन (काफ़िरो) के कामों के (वजाल) से बचा ले.”

(૪૪)

رَبِّ أَوْزَعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ
عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ
وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ⑩

રબ્બિ અવ્ઝિઅની અન્ અશ્કુર નિઅમતકલ્લતી
અન્અમ્ત અલય્ય વ-અલા વાલિદય્ય વ-અન્ અઅમલ
સાલિહન્ તર્ઝાહુ વ-અદ્ખિલ્ની બિ-રહ્મતિક ફી
ઈબાદિકસ્-સાલિહીન. (સૂર: નમ્લ, આ. ૧૮)

“અય મેરે રબ ! તુ મુજે તૌફિક દે કે મેં ઉન
ને’મતોં કા શુક બજા લાઉં, જો તુને મુજ પર ઈના’મ
કી હૈ ઓર મેરે માં-બાપ પર, ઓર મેં ઐસે નેક
આ’માલ કરતા રહું, જિનસે તુ ખુશ રહે ઓર મુજે
અપની રહમત સે નેક બંદો મેં સામિલ કર લે.”

(૪૫)

رَبِّ هَبْ لِي
مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً
إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝

રબ્બિ હબ્-લી મિંલ્લ-દુન્ક ઝુરિય્યતન્ તય્યિબા,
ઈન્નક સમીઉદ્-દુઆ-અ.

(સૂર: આલે ઈમરાન, આ. ૩૮)

“અય મેરે રબ ! મુજે અપને પાસસે પાકીઝા
(નેક) ઔલાદ અતા ફરમા, બેશક તુ દુઆ કા
સુનનેવાલા હૈ.”

(૪૬)

رَبِّ

لَا تَذَرْنِي فَرْدًا

وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ﴿٨٩﴾

રબ્બિ લા-તાઝરની ફરદંવ્-વ-અન્ત ખઈરુલ્
વારિસીન. (સૂર: અંબિયા, આ. ૮૯)

“અય મેરે રબ ! તુ મુજે અકેલા (બેઔલાદ)
ના છોડ દે ઔર તુ સબસે બેહતર વારિસ હૈ.”

(४७)

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۙ
وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۙ
وَاحْلُلْ عُقْدَةً
مِّنْ لِّسَانِي ۙ يَفْقَهُوا قَوْلِي ۝

रब्बिश्-रह्ली सदरी, व-यस्सिरली अमरी,
वाह्लुल् उक़दतम्-मिंल्-लिसानी, यक्कह्लू क्वली.

(सूर: ता-हा, आ. २५-२८)

“अय मेरे रब ! मेरा सीना खोल दे और मेरा
काम मुझ पर आसान कर दे और मेरी ज़बान की
गिरह (लुकनत) भी खोल दे, ताके लोग मेरी बात
को समझ सके.”

(૪૮)

رَبِّ

إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ

إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٢﴾

રબ્બિ ઈશી લિમા-અન્ઝલ્ત ઈલય્ય મિન્ ખઈરિન્
ફકીર. (સૂર: કસસ, આ. ૨૪)

“અય મેરે રબ ! મેં ઈસ બાત કા મોહતાજ હું કે
મુજ પર અપની ને’મત નાઝિલ ફરમાએ.”

(४८)

رَبِّ اَرْحَمُهُمَا

كَمَا رَبَّيْتَنِي

صَغِيرًا ^ط

रब्बिर्-उम्हूमा क-मा रब्बयानी सगीरा.

(सूर: बनी इसराईल, आ. २४)

“अय मेरे रब ! जैसा तूने (मां-बापने)
बचपन में पाला है, तू भी तूनेके डाल पर रहम
करमा.”

(५०)

رَبِّ اغْفِرْ
وَارْحَمْ

وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ۞
ع ۱۱۸

रब्बिगु-किर् वर-उम् व-अन्त षर्दुरु-राहिमीन.

(सूर: मु'मिनून, आ. ११८)

“अय मेरे रब ! तु मुझे बक्ष दे और मुज पर
रहम इरमा. तु रहम करनेवालों में सबसे ज्यादा
रहम करनेवाला है.”



तम्भत ङिदु-अर्धर

